ISSN : 2583-2948

गुरू-कर्म

डॉ हेमलता बुद्धा
अतिथि प्राध्यापक, आंध्र विश्वविद्यालय
विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश
मो॰ – 788172221

शिक्षक हमारे पूज्यनीय गुरू हैं,
बचपन से ही पाठ पढ़ाया,
माता-पिता ने यही सिखाया,
किताबों ने भी यही सिखाया।

शिक्षक भूल गये गुरूत्व को निभाना,
बच्चों के जीवन में ज्ञान का दीप जलाना,
ऊँचे पद की कुर्सी उन्हें प्यारी,
कुर्सी उनके लिए जग से न्यारी।

कुर्सी की चाह में,
अच्छा-बुरा न सोच पाते,
बच्चों के जीवन से खेल,
स्वार्थ में अंधे होते जाते।

लायक नहीं शिक्षक, कुर्सी के,
फिर भी जमकर बैठ गए,
न जाने कितने काबिल लोग,
इनकी कुर्सी के बलि चढ़ गए

पूछो किसी शंका का हल,
तो कहते कल-कल
'नहीं पता मुझे' ,स्पष्ट कहे,
किस बात से वे डरा करते।

सच बोलो और बोलना सिखाओं
यही तुम्हारा गुरू धर्म है
जो तुम इनको भी न निभा सके
फिर कहो कि शिक्षक का क्या कर्म है?

शिक्षक के धर्म निराले,
नाम बड़े और दर्शन छोटे,

ISSN : 2583-2948

दर्शन मिले भगवान के,
गुरू के दर्शन को हम तरसे,

निर्भर है शिक्षक पर,
अंतेवासियों का जीवन,
त्रिकालदर्शपूर्ण हमारा जीवन,
अभिनायक के अंधे राज में।

शिक्षक ऐच्छिक संपत्ति समझते है,
अपने को छोड़ छिद्रन्वेषी समझते है,
परोक्ष और पराश्रयी भी होते है,
अद्वितीय समझने वाले होते है।

अंतेवासी अंधकार जीवन में,
अदूरदर्शी जीवन में ,
मार्गदर्शी असंभव उसका,
जीवन लगता दाव उनका।

अध्ययन में निरूत्साहता,
हृदयद्रावक घाव न सहना,
गुरू-अज्ञान जाल को निकालना,
अंतवेसी का धर्म भी है अपना ।